विष चिकित्सा

(वैदिक, आयुर्वेदिक एवं परम्परागत चिकित्सा)

Holistic Management of Poisonous Bites

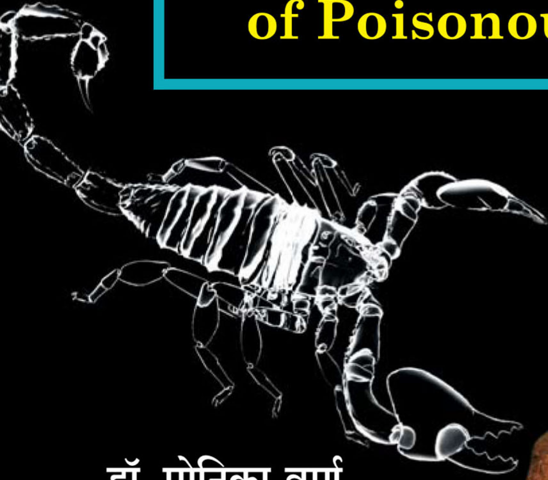

डॉ. मोनिका वर्मा
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पूर्विया
डॉ. एल. एन. शर्मा

SCIENTIFIC PUBLISHERS

विषचिकित्सा

(वैदिक, आयुर्वेदिक एवं परम्परागत जान्तव विषचिकित्सा)

HOLISTIC MANEGEMENT OF POISONES BITES

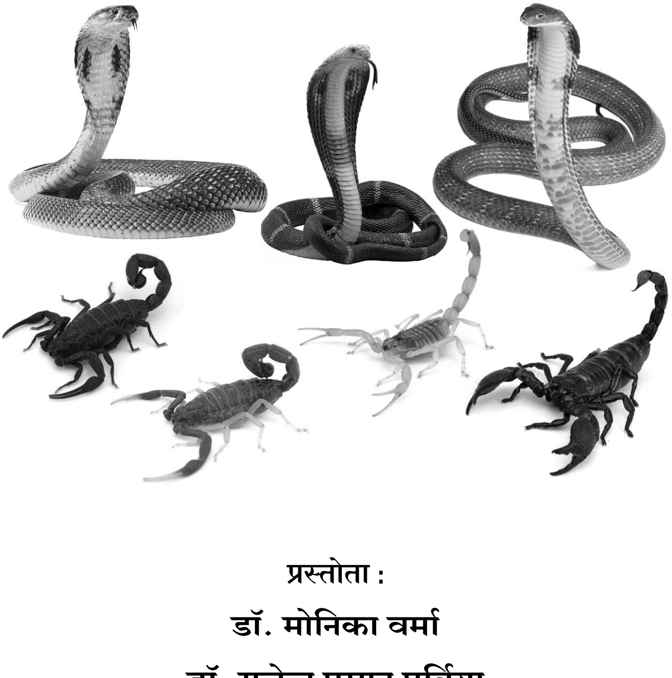

प्रस्तोता :

डॉ. मोनिका वर्मा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पूर्विया

डॉ. एल. एन. शर्मा

साईन्टिफिक पब्लिशर्स

प्रकाशक

साईन्टिफिक पब्लीशर्स (इण्डिया)

5–ए, न्यू पाली रोड, पो. बा. नं. 91
जोधपुर–342 001 (राज.)
टेलिफोन : 0291–2433323
E-mail : info@scientificpub.com

© 2019, लेखक

प्रत्याख्यान– Limits of Liability and Disclaimer of Warranty.

समस्त अधिकार आरक्षित है इस प्रशासन अथवा इसमें प्रस्तुत रूपान्तरित संक्षिप्त अनुवादित या भण्डारित पुन: प्राप्य प्रणाली, कम्प्यूटर प्रणाली, छाया चित्रांकन या अन्य पद्धतियों में अथवा किसी भी प्रारूप में संचारित अथवा किसी साधन से इलेक्ट्रॉनिक यान्त्रिकी प्रतिलिपीकरण, ध्वनि अंकन अथवा अन्यथा से प्रकाशन की पूर्व लिखित अनुमति के बिना नहीं की जा सकेगी।

अस्वीकरण- यद्यपि प्रत्येक प्रयास त्रुटियाँ और लोगों को टालने का है यह प्रकाशन इस समझ–बूझ पर है कि न तो सम्पादक (या लेखक) ना ही प्रकाशक ना ही मुद्रक, किसी भी रूप से किसी व्यक्ति के प्रति जिम्मेदार नहीं हो सकेगें। इस प्रकाशन में यदि किसी त्रुटि या लोप के लिये अथवा उस किसी कार्यवाही के लिये ही जो इस कार्य के आधार पर की जाये। कोई असावधानी की विसंगति प्रकाशक के ध्यान में भविष्य के संस्करण में उसके सुधार के लिये लायी जा सकेगी यदि उसका प्रकाशन हो।

व्यापार चिन्ह सूचना- उत्पादन अथवा निगमन नाम, व्यापार चिन्ह अथवा पंजीकृत व्यापार चिन्ह हो सकेगें और उसका उपयोग उल्लंघन, के इरादे के बिना केवल पहचान या स्पष्टीकरण के लिये किया जा सकेगा।

ISBN: 978-93-87893-86-3

eISBN: 978-93-87991-70-5

Visit the Scientific Publishers (India) website at
http://www.scientificpub.com

भारत में मुद्रित

मंगलाचरण

त्वादत्तेभी रुद्र शंतमेभि: शतं हिमो अशीय भेषजेभि:।।
व्यस्मदद्द्वेषो वितरं व्यंहो व्यमीवाश्चातयस्ता विषूची।।

नमस्कृत्य वैद्यनाथाय तदुक्ति: परिभाव्यं च।
दंष्ट्राविषनिवारणाय विरच्यते सर्वविषचिकित्सा।।

आशीर्वचन

Prof. Dr. Radhey Shyam Sharma
Vice Chancellor
Office : Nagaur Road, Karwar,
JODHPUR - 342037 (Raj.)
Phone : 0291-5153701 (O)
0291-2542200 (R)
E-mail : vd.rssharma@gmail.com
rau.jodhpur@yahoo.co.in

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन्
राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय
जोधपुर
Dr. Sarvepalli Radhakrishnan
Rajasthan Ayurved University
Jodhpur

क्रमांक : रा.आ.विवि./वीसी./2017-18/05
दिनांक : 10 अप्रैल, 2018

मानव जीवन प्रभु की अति सुन्दर कल्पना है। सम्प्रति संङ्क्रमणसमय में समाधान के रूप में चरक ने सुन्दर वचन प्रस्तुत किया है-

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्।
रोगास्तस्यापहर्त्तार: श्रेयसो जीवितस्य च।।

धर्म, अर्थ और काम दैनन्दिन जीवन में नीतिपरक आचरण से उपार्जित अभ्युदय एवं मोक्ष अर्थात् परम दुर्लभ मानवयोनि का चरमलक्ष्य तभी सम्भव है जब मनुष्य शरीर, मन, आत्मा और इन्द्रिय से प्रसन्न अर्थात् स्वस्थ रहे। इस लोक में अभ्युदय और परलोक में नि:श्रेयस् की अवाप्ति का मूल कारण निरामयजीवन है। निरामय जीवन को प्रबाधित करने वाले कारक आधि और व्याधि कहलाते हैं। उनमें भी आधि केवल स्वसंवेद्य होती है परन्तु व्याधि स्वसंवेद्य होने के साथ

परसंवेद्य भी होती है तथा आमय, गद, आतंक, रोग व्याधि के पर्यायरूप से कहे जाते हैं।

शरीर की पीड़ा आधिभौतिकरूप से विविध प्रकार के प्राणियों के विष से भी उत्पन्न होती है। सर्प, वृश्चिक जैसे प्राणियों के विष मनुष्यजीवन के लिये प्राणघातक कहे गये हैं तथा मरुभूमि में इनकी घातकता और तीव्र हो जाती है। ग्रामवासी एवं सुदूर सीमावर्ती क्षेत्र में सीमा के प्राणप्रहरियों के प्राणों पर निरन्तर विषैले प्राणियों के विष का आतंक बना रहता है। यद्यपि आधुनिक चिकित्साविज्ञान के द्वारा विष की त्वरित-चिकित्सा की जाती है तथापि आधुनिक औषधियों के प्रयोग के कालान्तर में दुष्परिणाम देखे जाते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकृति के अनुगमक आयुर्वेद शास्त्र में विषप्रभाव को दूर करने वाले अनेक औषधयोगों का संकलन किया गया है जिनकी अवाप्ति सहज है। ये औषधियां हमारे आस-पास उगने वाली वनस्पति के रूप में उपलब्ध है तथा कुछ विशेष प्रकार के मारकविष में विषनाशक-अगद का परिक्षित प्रयोग आयुर्वेद साहित्य में उपलब्ध है। इसके साथ ही इस सन्दर्भ में मन्त्र एवं स्थानीय उपचार की समानान्तरधारा भी हमारे लोकजीवन में व्याप्त है जो ग्रन्थीकरण के अभाव में उपेक्षित है।

विषचिकित्सा में वेद से लेकर पुराणों और काव्यों में विषचिकित्सानिदान के प्रयोग, विषचिकित्सानिदान के मन्त्रप्रयोग, वानस्पतिक-प्रयोग एवं आयुर्वेदीय अगदयोगों को संकलन किया गया है साथ ही ग्राम्य औषध-उपचारों के अनुभवों का भी संकलन किया गया है। मैं समझता हूं कि यह एक श्रमसाध्य कार्य है। इस कार्य हेतु मैं **डॉ. मोनिका वर्मा**, **डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा** और **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पूर्विया** को शुभकामना देते हुए इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

(प्रो. डॉ. राधेश्याम शर्मा)

कुलपति

समर्पण

''बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्''

किसी भी विषय के प्रस्तुतिकरण का संकल्प, क्रिया एवं क्रियान्विति का साफल्य परमपिता परमेश्वर की अनुकम्पा से ही सम्भव है।

इसलिए इस प्रस्तुतिकरण हेतु **अगोचर परमपिता का अन्तर्मन की गहराईयों से नमन।**

भूतल पर परमात्मा स्वरूप हमोर पितृचरण का उपकार भी शब्दों द्वारा शब्दित नहीं किया जा सकता पुन: कृतज्ञता ज्ञापन की परम्परा का निर्वहन करते हुए हमारे **पूज्य पितृचरणों में शत: शत: वन्दन**

एवं

अपने उपदेशों से गौरवान्वित करने वाले **गुरुवर्य के श्रीचरणों में कोटिश: वन्दन।**

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पूर्विया   डॉ. मोनिका वर्मा   डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा

प्राक्कथन

राजस्थान रणबांकुरों की जन्मस्थली है। यहाँ के बच्चे-बच्चे में देशभक्ति का सागर उमड़ता है। दूर-दूर तक अथाह रेत के समन्दर पर नृत्य करती सिकतारश्मियाँ, तेज हवाओं के बजते जलतरंग और सुदूर आकाश में चिलचिलाता सूर्य, दूर-दूर तक जाते ऊँटों के काफिलें। कहीं कहीं सहसा एक कंटीली झाड़ी या खेजड़ी, बबूल के छितरायें पेड़ इस सूखे समन्दर में जीवन का संकेत करते हैं। लोगों के हौंसलों को सलाम, जो रेत के इस बियाबान को गुलजार करते हैं। ऊँटों के साथ-साथ भेड़, बकरी, गायों और छोटे-छोटे गाँवों की कहानी है ये सेहरा। इन सभी के साथ भयंकरतम विषैले जीवजन्तु, जीवन की सुखद तस्वीर से बिल्कुल जुदा है रेगिस्तान का जीवन। यह जीवन हमारे पड़ौसी मुल्क में भी है केवल एक सरहद ने उसे पड़ौसी बना दिया। परन्तु ये सरहदें तो हम जहीन लोगों के लिये है मौसम, पंछी, हवा और इस जमीन के साथी ये विषैले साँप-बिच्छू, इनके लिये कोई सरहदें नहीं ये आप ही अपनी फौज है और आप ही अपने हथियार। इनका हथियार है इनका दंश जो न तो सरहद देखता है ना मनुष्य न जानवर, बस जो भी इनकी राह में आया उसे डस लेते हैं। जितना खतरा दुश्मन की फौजों का है, बवण्डर का है उतना ही रेत पर तैरने वाले इन साँप-बिच्छूओं का भी है। इनसे निपटने के उपाय आधुनिक - चिकित्सा विज्ञान में तो हैं ही जो बड़े ही प्रभावी हैं परन्तु कुछ उपाय जो पुराने काल से चले आ रहें है या पारम्परिक ज्ञान के रूप में प्राप्त हो रहें हैं वे भी अत्यन्त सरल और प्रभावी है, इसके अतिरिक्त उनका प्रयोग अपेक्षाकृत कम खर्चीला हैं अत: ऐसे कुछ प्रयोग हैं जो प्राचीनशास्त्रों, परम्परा और मंत्र के रूप में संकलित किये गये हैं उनका पुस्तकीय संकलन किया गया हैं। मातृभूमि के सपूतों की सेवा में हमारा यह संकलन एक छोटा सा प्रयास है जो श्रद्धा और विश्वास की अपेक्षा करता है।

इस संकलनकार्य में हमने नागजाति–संदर्भित पौराणिक विषय लिये हैं क्योंकि नागों और मनुष्यों के संबन्ध प्राचीनकाल से चले आ रहें है तथा नागदंश के प्रति एक भय का वातावरण भी प्राप्त होता है तथा उस भय से मुक्ति के उपाय भी अनेक रूपों में प्राप्त होते हैं जैसे– मंत्र, झाडफूँक, औषधि, धागा इत्यादि। वर्तमान में भी इनकी कारकता देखी जाती है। अत: इस संकलन में न केवल औषधप्रयोग अपितु मंत्रों का संकलन भी किया गया है जिससे इस संकलन में पूर्णता आ सके।

आयुर्वेद विश्वविद्यालय में कार्यरत डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा तथा डॉ. राजेन्द्र पूर्विया के सहयोग से हमारे इस प्रयास को सफल बनाने के लिये हमने आयुर्वेद के चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, अष्टांगसंग्रह, अष्टांगहृदय, योगरत्नाकर, भावप्रकाश, गदनिग्रह, धन्वन्तरिनिघण्टु, राजनिघण्टु, कैयदेवनिघण्टु आदि के चिकित्सीय प्रयोगों का भी समावेश किया है।

– डॉ. मोनिका वर्मा

अनुक्रमणिका

भाग–1
सर्पविष विष चिकित्सा

क्रमांक	विषय – वस्तु	पृष्ठ सं.
	आशीर्वचन	*v*
	समर्पण	*vii*
	प्राक्कथन	*ix*
1.	नागसन्दर्भित पौराणिक आख्यान	1
2.	अथर्ववेदीय विषनिवारक सूक्त	4
3.	महाभारत में सर्पनिवारकश्लोक	8
4.	अग्नि–गरुड़ पुराण में सर्पविष चिकित्सा	9
5.	संहिताग्रन्थों में जंगम विषचिकित्सा विष की उत्पत्ति, विष पर ऋतुओं का प्रभाव, विषवृद्धि का समय, विष के गुण, विष की योनि, जंगम विष, जंगम विष का सामान्य प्रभाव, विष की गति, आयुर्वेद मतानुसार सर्पों का वर्गीकरण, वर्णभेद से सर्प के प्रकार, लिंग भेद से सर्प के प्रकार, डसने के कारण, सविष – निर्विषदंश, सर्पविष में शकुनविचार, सर्प के दंत, सर्पों में विष की मात्रा, सर्पदंश के प्रकार, सर्पदंश के सामान्य लक्षण, लिंग भेद से सर्प दंश के लक्षण, सर्पविष के सात वेगों के सामान्य लक्षण, सर्पदंश से मृतप्राणी के लक्षण, सामान्य उपक्रम, दोषानुसार विष चिकित्सा, वेगानुसार विशिष्ट चिकित्सा, सर्पविष की सामान्य चिकित्सा, विष–निवारक सामान्य योग, संग्रहग्रन्थों में सर्पविष चिकित्सा, अनागतबाधा प्रतिषेध, सामान्य चिकित्सा, संग्रहग्रन्थों में सर्पविष की विशेष चिकित्सा, वेगानुसार चिकित्सा	11
6.	सर्पविषघ्न औषधियां का सचित्र विवेचन	48
7.	सर्प विष की अनुभूत और परम्परागत चिकित्सा	63

भाग–2
वृश्चिक विष चिकित्सा

8. वृश्चिक विष — 67
अग्नि–गरुड़ पुराण में बिच्छूविष चिकित्सा

9. वृश्चिक विष — 69
वृश्चिक की उत्पति, संख्या, सामान्य लक्षण, सामान्य चिकित्सा, स्थानीय उपचार

10. संग्रहग्रन्थों में वृश्चिकदंश चिकित्सा — 74

11. वृश्चिकदंश में प्रयुक्त होने वाली प्रमुख एकल औषध और उनके चित्र — 76

12. वृश्चिकविष की अनुभूत और परम्परागत चिकित्सा — 88

भाग–3

13. अवशिष्ट विषचिकित्सा — 93

14. प्रयुक्त शब्दावली — 103

15. सांकेतिक शब्दावली — 104

16. संदर्भ ग्रन्थ सूची — 105

भाग–1